بسم الله الرحمن الرحيم

Friday Sermon in Hindi HADHRAT MUHYI-UD-DIN AL-KHALIFATULLAH Munir Ahmad Azim(as)

09 February 2018

(22 Jamad'ul Awwal 1439 AH)

अपने सभी चेलों सहित सभी नए चेलों, (और दुनिया भर के सभी मुसलमानों) को शांति का अ भवादन करने के बाद हज़रत ख़लीफ़तलाः (अतबअ) तशहूद, तौज ,सुरा अल फातिहा पढ़ा और फर उन्होंने अपना उपदेश दिया : "दया"।

दया

इस्लाम में, दया का तात्पर्य सर्वशक्तिमान ईश्वर के भय से है। इसके लए अल्लाह सर्वशक्तिमान के डर के साथ उच्चतम दशा (वश्वास आदि) पर पहुंचे हैं, यातना दूर हो गया हैं, शैतान का बुरा प्रभाव पीछे हटाया गया है। कुरान के व भन्न छंद और हदीस के अनुसार, यह स्पष्ट होता है क पृथ्वी पर जीवन सद्धांत के नीव पर बनाया गया है जो खुशी को जन्म देते हैं और जीवों को एक दूसरे की मदद करने और दया के साथ सबसे प्रमुख रहने के लए प्रोत्साहित करते हैं।

दरअसल, दया एक महान गुणवत्ता है जो सर्वशक्तिमान अल्लाह ने सौभाग्यशा लयों को दिया है और बद कस्मती से कोई वं चत हो जाते है। दया प्रत्येक प्राणी के दिल में प्रत्यारो पत है ले कन यह इस बात पर निर्भर है क इस दया को अल्लाह सर्वशक्तिमान के लए जी वत कैसे रखा जाए।

अबू हुरैरा (र अ) के अनुसार पैगंबर मुहम्मद (स अ व स) ने कहा, जैसा क साहिह अल बुखारी के पृष्ठों के माध्यम से सूचना दी : "वास्तव में अल्लाह के पास सौ दयालुता है और उनमें से एक दया है जिसके माध्यम से सभी सृष्टि मेंcएक दूसरे के लए दया दिखते है और निन्यानवे पुनरुत्थान के दिन के लए हैं ... "अल्हम्दु लल्लाह !

दया सर्वशक्तिमान अल्लाह के सुंदर गुणों में से एक है। हमारे लए,सर्वशक्तिमान अल्लाह के प्रा णयों, दया गुणवत्ता की सद् ध है। दया के साथ, जीव एक दूसरे की ओर कोमलता को महसूस करते हैं। जो ताकतवर है वह कमजोर पर करुणा /सहानुभूति दिखायेगा । वह दया है। अमीर आदमी कभी गरीबों की मदद करने में हिच कचाता नहीं है, बेसहारा और जरूरतमंद। वह दया है। एक उम्महात में हमारे लए (मुसलमानों) दया परिवार के साथ-साथ समाज के स्तर पर भी एक दायित्व है। और वह प्रसन्न करता है अल्लाह सर्वशक्तिमान जो फर उन पर प्रसन्न होकर अपना आशीर्वाद देता है जब वह अपने दैनिक व्यवसायों में दूसरों पर दया दिखाते हैं (दूसरे लोगों पर) ।

दया अल्लाह सर्वशक्तिमान के द्वारा दिया गया एक उपहार है जो उसने हर कसी मनुष्य के शरीर में लंगर कर दिया है । ले कन, कुछ लोग अल्लाह सर्वशक्तिमान के इस उपहार को एक धैर्ययुक्त दशा में छोड़ देते हैं, वह आध्यात्मिक मूल्य को नहीं समझ पाते है। वशेष रूप से जब मनुष्य आसानी से शैतान से प्रभा वत होता है, और फर गुनाह करता है, दूसरों की तुलना में कुछ अ धक गंभीर होता है, इस प्रकार इस महान आध्यात्मिकता को जो दया है उसके हाथों से गुजरने की अनुमति देता है। वह इस प्रकार इस आशीर्वाद को खो देता है।

उम्मत के वश्वा सयों में, दया एक प वत्र तत्व है, एक दिव्य उपहार, एक

बहुमूल्य तत्व है | इस्लाम ने मुसलमानों को दयालु होने का आदेश दिया है क्यों क इस्लाम स्वयं ही दया का धर्म है | जैसे इस्लाम की शक्षाओं की प्राप्ति के लए
भलाई, न्याय, दयालुता, धीरज ,शांति, सत्य, अमन, और अल्लाह सर्वशक्तिमान की इबादत आरक्षण के बिना आया था। दयालुता क्या गलत है और बुराई, अनैतिक, घृणास्पद को हटाने के लए एक मौका भी देती है। अल्लाह सर्वशक्तिमान ने अपने पैगंबर मुहम्मद (स अ व स)से कहा,: "हमने आपको केवल दया के रूप में इस दुनिया के निवासी की तरह भेजा है । "(अल-अंबिया २१: १०८)।

अब्दुल्ला इब्न 'अम्र के अनुसार, अल्लाह के पैगम्बर (स अ व स) ने कहा: " उन लोगों पर दया (यानी, अल्लाह) दिखाता है जो दयालु हैं ; जो पृथ्वी पर रहने वालों पर दया करो ,ता क स्वर्ग में रहने वाला आप पर दया करे।"(ति र्म ध)।

जारिर इब्न अब्दल्लाह के अनुसार प वत्र पैगंबर मुहम्मद (स अ व स) का एक और स्पष्टीकरण, जैसा क हदीस, बुखारी और मुस्लिम में बताया गया था: "अल्लाह नहीं करता है उस व्यक्ति पर दया नहीं करता जो लोगों (मानव जाति) पर दया नहीं दिखाता "।इसके अलावा, जो एक माफ नहीं करता (दूसरों को), कभी अल्लाह सर्वशक्तिमान द्वारा कभी क्षमा नहीं कया जाएगा। वश्वा सयों का उदाहरण उनकी दोस्ती, उनके स्नेह, उनकी करुणा,उनकी ईमानदारी, उनकी सत्यवादिता, उनकी मदद की भावना, उनके शरीर की तरह है उनकी सहानुभूति|अगर इस शरीर के सदस्यों में से एक भी पी ड़त है, तो पूरा शरीर पी ड़त होगा।

यहां तक क सबसे कम उम्र के बच्चे, शशुएं ,अपने बुजुर्गों से दया मांगते हैं।
बुजुर्ग, कमजोर, बीमार, से संबं धत दया दो गुनी होनी चाहिए, तीन गुनी, असी मत भी होनी चाहिए।"वह हमारे नहीं है जो बुजुर्गों का सम्मान नहीं करते है, युवाओं ,बच्चों के लए दयालु नहीं हैअपने दैनिक जीवन में अच्छा वहित नहीं कर रहे हैं, और बुराई,दुर्भाग्य, अत्याचार, गर्व, भ्रष्टाचार और समाज की अन्य बुराइयों को वर्जित नहीं कर रहे है, " ति र्म ध के हदीस के अनुसार प वत्र पैगंबर मुहम्मद (स अ व स) ने कहा।

वश्वा सयों की वा लदा , हजरत आइशा (र अ) ने इस बारे में एक छोटी सी दया की घटना का ववरण सुनाया जिसे उन्होंने पैगंबर (स अ व स) के साथ अनुभव कया है। उन्होंने बताया: "एक बेडो वन अल्लाह के पैगम्बर को देखने के लए आया और उनसे कहा, 'तुम बच्चों को गले (अंगीकार करो)लगाओ और हम इसे बहुत ही कम करते हैं या यहां तक क कभी नहीं करते हैं। " प वत्र पैगंबर (स अ व स) ने उत्तर दिया, "यदि अल्लाह सर्वशक्तिमान ने आपके दिल से दयालुता ले ली है तो मैं तुम्हारे लए क्या कर सकता हूं ? "(बुखारी)।

पशुओं की भाषा

यहां तक क जानवरों ने, यहां तक क प्रकृति ने, सर्वशक्तिमान ईश्वर से दया प्राप्त की है। यह ऐसा क्यों है? इस्लाम वास्तव में दया, न्याय, शांति का धर्म है। इस्लाम ने वशेष रूप से मुसलमानों को दयालु होने का आदेश दिया है ।

अब्दल्लाह इब्न जाफर ने सुनाया: "अल्लाह के पैगम्बर (स अ व स) ने अंसारों के बीच एक आदमी से संबं धत एक बाड़ लगे हुए बगीचे में प्रवेश कया, जहां एक ऊंट था। जब जानवर ने पैगंबर को देखा, तो उसने आँसू बहाए और दर्दनाक तरीके से चल्लाना शुरू कर दिया। अल्लाह के पैगम्बर कुटिल जानवर के पास पहुंचे, उसके आंसुओं को पोंछ दिया, उसे निडरता से सहारा दिया। ऊंट ने कराहना बंद कर दिया और खुशी के संकेत को दिखाया। प वत्र पैगंबर (स अ व स) ने पूछा क मा लक कौन था? अन्सारों से एक जवान आदमी ने जवाब दिया क वह मा लक था । प वत्र पैगंबर (स अ व स) ने उससे कहा, "क्या आपइस जानवर के संबंध में अल्लाह से नहीं डरते? आप द्वारा उसे स्नेह, प्यार और दया की कमी है। इसने मुझे शकायत की है और रो रही है। "(अहमद)।

अल्लाह ने प वत्र पैगंबर (स अ व स) को ऊंट की भाषा को समझने के लए का यह उपहार दिया उन्होंने प क्षयों की भाषा को उनके पैगंबर सुलेमान को सखाया।

एक और मौके पर, पैगंबर (स अ व स) ने कहा: "जो कोई भी बिना कारण के पक्षी एक का वध करता है, उत्तरा धकारी अल्लाह सर्वशक्तिमान को न्याय के दिन शकायत करेगा, कहते है, 'हे अल्लाह! कसी ने मुझे यातना दी, मुझे घायल कर दिया, यहां तक क मुझे कसी वास्त वक कारण के बिना मारे गए, मेरे प्रति दया की कम से कम संकेत भी बिना दिखाए... ''। ऐसे क्षणों पर अल्लाह
सर्वशक्तिमान की सजा की कल्पना करो।

इस्लाम अ वश्वा सयों के प्रति भी धा र्मकता निर्धारित करता है। इस तरह अ भनय करते समय,मुसलमान अल्लाह सर्वशक्तिमान की खुशी के लए दया दिखाता है।

परस्पर प्रति क्रया करना

जब हम रहते हैं, इस्लाम में भाइयों और बहनों, यह छाप देता है क दया अब मुसलमानों की शब्दावली का हिस्सा नहीं है। हम इस उम्मत में जीवन के हर कदम में हर कसी के लए दयालु होने पर दायित्व है। यहां तक क एक व्यक्ति को भी जो आपको उसका सबसे बुरा दुश्मन कहता है। इसके वपरीत, इस्लाम करुणा की सफारिश करता है और आपको प्रार्थना करने के लए कहता है (गड गडाते हुए अल्लाह की / दुआओं) सर्वशक्तिमान अपने आशीर्वाद देने के लए उन लोगों के लए, जो नुकसान कर रहे हैं, ता क वे सुधार कर सकें।

पृथ्वी पर जीवन के इस बिंदु पर, मानवता को उच्च इस्लामी सद्धांतों की आवश्यकता होती है, और यह सच्चे दिव्य / इस्लामी शक्षाओं को पुनर्जी वत प्रयास करने की आवश्यकता है ता क मानवता , और इस्लाम के पैगंबर (स अ व स) की उम्मत
आ खरकार वांछित शांति पाए। इंशा-अल्लाह, आमीन |

Translator, अनुवादक: फातिमा जैस्मिन सलीम

Place , स्थान : त मलनाडु, इं डया